jewan yatra1:arunjaity.qxd 9/26/2010 10:17 PM Page 34

के जिस चुनाव क्षेत्र का वे लोक सभा में प्रतिनिधित्व कर रहे थे, उसे ही उन्होंने सर्वांगीण विकास की अपनी पहली प्रयोगशाला बनाने का निश्चय किया। गोंडा जिले से उनका संबंध गोरखपुर के विभाग प्रचारक और बाद में जनसंघ के महामंत्री के नाते बहुत पहले से चला आ रहा था। वहां के चप्पे-चप्पे को उन्होंने छाना था। वहां छायी गरीबी, अशिक्षा और पिछड़ेपन से वे भली-भांति परिचित थे। अतः स्वाभाविक ही उन्होंने इस पिछड़े जिले को अपने रचनात्मक कर्म की प्रयोगशाला बनाया। 25 सितम्बर 1977 को दीनदयाल जी की जयन्ती के अवसर पर उन्होंने अपने निर्णय की घोषणा की। बलरामपुर की महारानी राजलक्ष्मी, जो लोक सभा चुनाव में उनकी मुख्य प्रतिद्वन्दी थीं, से भेंट होने पर जब उन्होंने अपनी योजना बताई तो उन्होंने जमीन का एक टुकड़ा नानाजी को भेंट किया। इसी टुकड़े को केन्द्र बनाकर नानाजी ने 54 एकड़ क्षेत्रफल का एक विशाल परिसर बनाया, जिसे जयप्रकाश और उनकी धर्मपत्नी प्रभावती की संयुक्त स्मृति में 'जयप्रभा ग्राम' नाम दिया। नानाजी ने जिले की गरीबी से बाहर निकालने के लिए 'हर खेत में पानी, हर हाथ को काम' का नारा दिया। सर्वांगीण विकास के चार सूत्र निर्धारित किए 1. शिक्षा, 2. स्वावलंबन, 3. स्वास्थ्य एवं 4. समरसता।

गोंडा में तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. नीलम संजीव रेड्डी को प्रकल्पों की जानकारी देते हुए

उन्होंने देखा कि खेती के विकास के लिए हैण्डपम्प के द्वारा भूजल को खेतों तक पहुंचाने की व्यवस्था करनी होगी। उन्होंने एक साल के भीतर 20000 हैण्डपम्प के गड्ढे (बोरिंग) खोद कर विस्मयकारी रिकार्ड स्थापित कर दिया। महंगे स्टील पम्प की जगह बाँस के पम्प का आविष्कार किया। बिजली चालित मोटर की जगह बैल चालित रहट का प्रयोग किया। परम्परागत दस्तकारों के लिए कच्चे माल व विक्रय केन्द्रों की व्यवस्था की। युवाओं को रोजगार देने के लिए गोंडा में पॉलिटेक्नीक केन्द्र की स्थापना की। पशुपालन में मत्स्य-पालन, कुक्कुट-पालन, गोपालन के प्रयोग किए। सामाजिक समरसता का दृश्य प्रस्तुत करने की दृष्टि से 25 नवंबर 1978 का दिन स्वाधीन भारत के इतिहास का एक विस्मरणीय दिन रहेगा। उस दिन पहली बार भारत के राष्ट्रपति डॉ. नीलम संजीव रेड्डी ने जयप्रभा ग्राम में गरीब किसानों के साथ एक पंक्ति में जमीन पर बैठकर पत्तल और मिट्टी के प्याले में सादा भोजन किया और ग्रामोदय प्रकल्प का औपचारिक (विधिवत्) उद्घाटन किया। यह नानाजी की सर्वमान्यता का ही परिचायक है कि राष्ट्रपति ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक बालासाहेब देवरस की बगल में बैठने में कोई परहेज नहीं किया। शिक्षा, स्वास्थ्य आदि की दृष्टि से अनेक प्रकल्पों का विस्तृत विवरण न देकर, इतना कहना पर्याप्त होगा कि गोंडा प्रकल्प की सफलता की गूंज देश और विदेश में सुनाई दी। हिन्दुस्तान टाइम्स के संपादक बी.जी.वर्गीस ने 17 से 19 अक्टूबर 1981 में गोंडा जिले का सघन दौरा करके प्रत्यक्ष काम को देखा और लेखों में सराहा। मुम्बई के प्रसिद्ध साप्ताहिक 'लिटज' ने 15 अगस्त 1981 के विशेषांक में लिखा 'गोंडा में अक्षरशः चमत्कार हुआ है।' लंदन के प्रतिष्ठित साप्ताहिक 'इकानामिस्ट' ने 22 मई 1982 के अंक में बाँस के पाईप और डीजल की जगह बैलों की जोड़ी के द्वारा हैण्डपम्प को चलाने के प्रयोग का रोचक वर्णन प्रस्तुत

बाल जगत, नागपुर में नानाजी अति पिछड़े बीड में नानाजी ने ही नौनिहालों के चेहरों पर मुस्कान बिखेरी